P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-10* June- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के सामाजिक व आर्थिक सशक्तिकरण में डेयरी व पशुपालन की भूमिका : जयपुर जिले के विशेष संदर्भ में

Role of Dairy and Animal Husbandry In Social and Economic Empowerment of Women In Rural Areas: With Special Reference to Jaipur District

Paper Submission: 10/06/2020, Date of Acceptance: 20/06/2020, Date of Publication: 24/06/2020

महावीर सिंह चौपड़ा
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

भारत की आत्मा गांवो में निवास करती है। गांधी जी का यह कथन भारत में ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या एवं ग्रामीण क्षेत्र के आर्थिक क्रियाकलापों के महत्व को दर्शाता है। भारत में जनगणना 2011 के अनुसार 68.80 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में आय का प्रमुख स्रोत कृषि एवं पशुपालन एवं इससे जुड़ी हुई आर्थिक क्रियाएं हैं। मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं की नगरीय क्षेत्रों की तुलना में कमी पाई जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि व पशुपालन में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की भागीदारी अधिक होती है। घरेलू पशुपालन में महिलाओं की भूमिका शत प्रतिशत होती है। भारत में डेयरी उद्योग का विकास 1970 में ऑपरेशन फ्लड की शुरुआत के बाद तीव्र गति से हुआ है। इसी समय के दौरान डेयरी सहकारी समितियों की स्थापना प्रमुखता से हुई तथा दूध उत्पादक (producer) भी पर्याप्त बाजार से निश्चिंत हो गए तथा डेयरी उद्योग उत्पादक उन्मुख हुआ। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि में फसल बुवाई और कटाई के समय ही ज्यादा श्रम की आवश्यकता होती है। इस प्रकार पशुपालन व डेयरी के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं परिवार के लिए अतिरिक्त आय का सृजन कर पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। पशुपालन व डेयरी में लगभग अधिकांश कार्य व प्रबंधन महिलाओं के द्वारा ही संपन्न किए जाते हैं, जिसके कारण पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के प्रति लोगों का नजरिया बदल रहा है तथा समाज में महिलाओं को बराबर का दर्जा मिल रहा है। महिला को " परिवार की धुरी " माना जाता है। परिवार के लिए अतिरिक्त आय व पशुपालन से दुग्ध विक्रय से प्राप्त सतत आय के कारण आर्थिक रूप से भी महिलाएं सशक्त हुई है।

The soul of India lives in villages. This statement of Gandhiji shows the importance of the population residing in rural areas in India and the economic activities of rural areas. According to Census 2011 in India 68.80 percent of the population lives in rural areas. The major sources of income in rural areas are agriculture and animal husbandry and its associated economic activities. Infrastructural facilities are found to be lacking in urban areas mainly compared to urban areas. In rural areas, women have more participation in agriculture and animal husbandry than men. Women play a 100 percent role in domestic animal husbandry. The dairy industry in India has grown at a rapid pace since the inception of Operation Flood in 1970. At the same time, dairy cooperatives were established prominently and milk producers (also elected) were demarcated from adequate markets and the dairy industry became productive oriented. Agriculture in rural areas requires more labor at the time of crop sowing and harvesting. In this way, women from rural areas meet the family needs by creating additional income for the family through animal husbandry and dairy. Most of the tasks and management in animal husbandry and dairy are done by women, due to which the attitude of people towards women in the male dominated society is changing and women are getting equal status in the society. The woman is considered the "axis of the family". Women have also been financially empowered due to the additional income for the family and the continuous income received from the sale of milk from animal husbandry.

मुख्य शब्द : आर्थिक क्रियाकलाप, सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण, रोजगार सृजन, ऑपरेशन फ्लड, कृषि व पशुपालन, ग्रामीण।
Economic Activity, Socio-Economic Empowerment, Employment Generation, Operation Flood, Agriculture and Animal Husbandry, Rural.

प्रस्तावना

ग्रामीण भारत की आर्थिक व्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आश्रित है। पशुपालन कृषि का अभिन्न अंग है। कृषि व पशुपालन प्राथमिक व्यवसाय के रूप में मिश्रित रूप से किए जाते हैं। वर्तमान समय में कृषि भूमि का अन्य गैर कृषि कार्य में उपयोग बढ़ने से तथा बढ़ती जनसंख्या के कारण जोतों का आकार छोटा होने से पशुपालन का ग्रामीण क्षेत्रों में महत्व बढ़ गया है। पिछले कुछ दशकों में पशुपालन व्यवसाय में निरंतर वृद्धि देखने को मिली है। पशुगणना 2012 के अनुसार राजस्थान में 577.32 लाख पशुधन है, जबकि 2007 में कुल पशुधन 566.63 लाख था। इस प्रकार 2007 से 2012 में 1.88% वृद्धि के साथ कुल पशुधन में 10.69 लाख की वृद्धि हुई है। भारत में पशु गणना 2012 के अनुसार कुल पशुधन 5120.6 लाख है। राजस्थान में भारत की कुल पशु संपदा का 11.27% हिस्सा है। पशुगणना 2012 के अनुसार जयपुर जिले में कुल पशुधन 28.03 लाख है।

भारत की कुल जनसंख्या 121.05 करोड़ का 68. 80% ग्रामीण क्षेत्र में निवास करता है, जबकि कुल महिलाओं की 69.10% जनसंख्या गांवो में निवास करती है, जबकि राजस्थान की कुल जनसंख्या 6.85 करोड़ में से 75.10% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। जयपुर जिले में 47.60% जनसख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राचीन काल में पशुपालन मुख्य रूप से कृषि कार्य में पशुओं के प्रयोग के लिए तथा घरेलू आवश्यकता की पूर्ति के लिए किया जाता था, लेकिन वर्तमान समय में धीरे–धीरे पशुपालन व्यवसायिक दृष्टिकोण से किया जाने लगा है। पशुपालन से कृषि कार्य में सहायता, अंडा, दूध उत्पाद प्राप्त होते हैं, लेकिन इन सबमें ग्रामीण क्षेत्र में दूध उत्पादन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है ।

पशुपालन व डेयरी से राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का लगभग 30% प्राप्त होता है। साथ ही ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं द्वारा घरेलू दूध उत्पादन से अतिरिक्त आय सृजन के साथ पारिवारिक पोषण में भी महत्वपूर्ण योगदान है। डेयरी व पशुपालन कार्य से महिलाओं का ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक व आर्थिक सशक्तिकरण हुआ है। राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण नीति 2001 में महिलाओं को पशुपालन हेतु प्रशिक्षण प्रदान करने पर जोर देने के साथ–साथ राष्ट्रीय महिला नीति 2016 के अनुसार महिलाओं को कृषि एवं पशुपालन क्षेत्र में सशक्त बनाने के लिए सरकार ने कार्यक्रमों व योजनाओं संबंधी प्रशिक्षण प्रदान करने पर बल दिया है। राजस्थान में डेयरी उद्योग की सर्वोच्च संस्था राजस्थान राज्य सहकारी डेयरी फेडरेशन (RCDF) है, जिसके अधीन सबसे निचले स्तर अर्थात ग्राम स्तर पर दूध संकलन के लिए महिला दुग्ध उत्पादक समितियों का गठन किया गया है, जिसमें सभी सदस्य महिलाएं होती हैं। अध्यक्ष व सचिव भी महिला सदस्यों में से ही बनाया जाता है जो उस समिति से संबंधित सभी कार्यों का संचालन करती हैं। इस प्रकार महिलाएं आत्मनिर्भर भी हो रही हैं। डेयरी भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण उपक्षेत्र है और 60 मिलियन ग्रामीण घरों को आजिविका प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह क्षेत्र रोजगार सृजन ,परिसंपत्ति निर्माण के साथ–साथ फसल नष्ट होने तथा प्रकृति की अनियमितता के खिलाफ वित्तीय सुरक्षा और रक्षा प्रदान करता है। गरीब लघु और सीमांत किसानों तथा भूमिहीन मजदूरों के 71% गौ पशु और 63% भैंस के संसाधन हैं। ग्रामीण क्षेत्र में दुधारू पशुओं को पालने से संबंधित अधिकांश क्रियाकलापों को महिलाओं द्वारा संपन्न किया जाता है। इस क्षेत्र में 15 मिलियन पुरुषों की तुलना में 75 मिलीयन महिलाएं संलग्न है।

अध्ययन का उद्देश्य (Objectives of the Study)

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में डेयरी व पशुपालन के माध्यम से प्राप्त आय, अतिरिक्त रोजगार सृजन, सतत आय का विश्लेषण तथा डेयरी में पशुपालन के माध्यम से प्रबंधन, निर्णय आदि के आधार पर महिलाओं का सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में सशक्तिकरण का अध्ययन करना है।

अध्ययन क्षेत्र (Study Area)

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण में डेयरी व पशुपालन की भूमिका का अध्ययन करने हेतु शोधकर्ता ने राजस्थान के जयपुर जिले को चुना है क्योंकि जयपुर राजस्थान का राजधानी क्षेत्र होने से इसके चारों और ग्रामीण क्षेत्र में शहर की मांग को देखते हुए कृषि व पशुपालन से संबंधित आर्थिक क्रियाए प्रमुख रूप से की जाती हैं। जिसमें प्रमुख रुप से साग – सब्जी का उत्पादन के साथ ही दूध उत्पादन पर भी विशेष बल दिया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र जयपुर राजस्थान की राजधानी है। इसे गुलाबी नगरी व भारत का पेरिस भी कहा जाता है। इसकी भौगोलिक स्थिति 26^0 23′ उत्तरी अक्षांश से 27^0 51′ उत्तरी अक्षांश तथा 74^0 55′ पूर्वी देशांतर से 76^0 50′ पूर्वी देशांतर के मध्य राज्य के उत्तरी – पूर्वी भाग में है। समुद्र तल से औसत ऊंचाई 425 मीटर है। इसका कुल क्षेत्रफल 11143 वर्ग किलोमीटर है। सीमावर्ती जिलों की दृष्टि से उत्तर में सीकर व हरियाणा का महेंद्रगढ़ जिला दक्षिण में टोंक पूर्व में अलवर , दौसा व सवाईमाधोपुर जिले व पश्चिमी नागौर , अजमेर जिलों की सीमाएं लगती हैं।

प्रशासनिक दृष्टि से जयपुर जिले को 13 उपखंड 16 तहसील व 15 पंचायत समितियों में बांटा गया है। जयपुर, बस्सी, चाकसू, सांगानेर, आमेर, जमुवारामगढ़, चौमू, फुलेरा, कोटपुतली, फागी, विराटनगर तथा शाहपुरा, किशनगढ़ रेनवाल ,मौजमाबाद एंव कोटखावदा जयपुर जिले की तहसीले है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-10* June- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

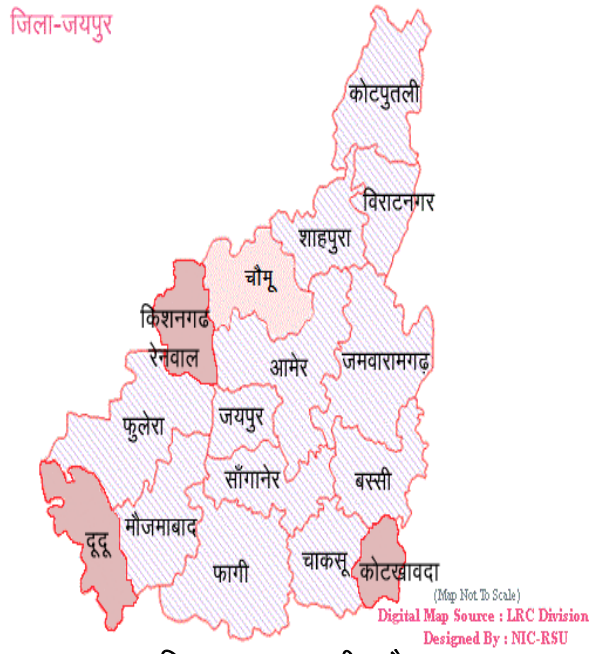

जिला जयपुर तहसील मैप

साहित्यावलोकन (Review of Literature)

निकेता, एल, सांखला, गोपाल. प्रसाद, कामता. और कुमार, संजीव (2017) ने अपने शोध लेख" कर्नाटक में डेयरी सहकारी समितियों के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण" में ग्राम स्तर पर महिला डेयरी सहकारी समितियों के अध्ययन में बताया कि डेयरी व महिला सशक्तिकरण में सकारात्मक व अत्यंत महत्वपूर्ण सहसम्बन्ध है महिला सशक्तिकरण में सामाजिक भागीदारी, प्रशिक्षण व व्यवहार की जानकारी प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

फातिमा, डॉ.सम्मान .अख्तर ,मो.वसीम (2014) ने अपने शोध लेख " Empowerment of Rural women through Dairy Industry in Begusarai district, Bihar." में वहा कि सुधा व गंगा डेरियों की भूमिका का ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान बताया । सुधा व गंगा डेयरी ने आनंद मॉडल (गुजरात) पर सफलतापूर्वक काम करने वाली जिला सहकारी समितियों की स्थापना की ।

दास ,सुष्मिता .,सारंगी ,एम के (2017) ने अपने शोध लेख " Economic Empowerment of rural women through dairy farming: A case study of Sidheswari women's milk producers union, Odisha " में बताया कि डेयरी फार्मिंग से जुड़ने के बाद महिलाओं की आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव आया है हालांकि महिलाओं के सामने कुछ समस्याएं हैं, लेकिन घर पर रोजगार, लचीला समय ,परिवार की आय में योगदान , सामाजिक स्थिति में वृद्वि , सरकारी पहल और आसान विपणन व्यवस्था जैसे कारको ने महिला किसानों को डेयरी फार्मिंग हेतु प्रोत्साहित किया है।

सोमशेखर (2018) ने अपने शोध लेख " Economic Empowerment of women through dairy farming under STEP in karnataka " में बताया कि भारत सरकार के support to traning and employment programme के द्वारा कर्नाटक में महिला डेयरी सहकारी समितियों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को समाज में प्रभावी भागीदारी और निर्णय लेने के विभिन्न स्तरों में समान अवसरों को सुनिश्चित किया है।

आंकड़ों के स्रोत तथा शोध विधि तंत्र (Source of data, method and Estimation Approach)

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में मुख्यतः द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है जिसमें जनसंख्या , पशुधन, दूध उत्पादन, दूध की दरें,, जयपुर डेयरी में महिला सदस्य संख्या, पंजीकृत दूध उत्पादक सहकारी समितियां आदि साथ ही प्राथमिक आंकड़ों में परिवार में महिलाओं की प्रस्थिति (Status), जीवन स्तर में सुधार आदि से संबंधित तथ्य, साक्षात्कार व वार्तालाप विधि से प्राप्त किए गए हैं।

डेयरी व पशुधन (Dairy and Livestock)

डेयरी उद्योग में दुधारू पशुधन का अत्यधिक महत्व होता है। उन्नत नस्ल के दुधारू पशु आर्थिक दृष्टि से लाभदायक होते हैं। ऐसे पशु महंगे होने पर भी तुलनात्मक रूप से साधारण दुधारू पशुओं की तुलना में अधिक लाभप्रद होते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उन्नत नस्ल के दुधारू पशु डेयरी उद्योग की धुरी हैं। अध्ययन क्षेत्र में दुधारू पशुधन की प्रमुख नस्लों में मुख्यतः गाय भैंस बकरी हैं तथा कुछ मात्रा में भेड़ भी हैं। राजस्थान में कुल पशुधन 577.32 लाख है, जिसमें सर्वाधिक संख्या बकरी वंश 37.53 , गौवंश 23.08 प्रतिशत, भैंस वंश 22.48 प्रतिशत है।

तालिकाः राजस्थान मे प्रमुख पशुधन वंश 2012

प्रमुख पशु धन	राजस्थान	राज्य के कुल पशुधन का प्रतिशत	जयपुर	जिले के कुल पशुधन का प्रतिशत
गौवंश	13324462	23.08	634941	22.64
भैंस	12976095	22.48	1073386	38.28
बकरी	21665939	37.53	837094	29.85

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-10* June- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भेड़	9079702	15.73	229948	08.20

स्रोत : पशुगणना 2012, पशुपालन विभाग राजस्थान

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि राज्य में सर्वाधिक बकरी वंश हैं तो जयपुर जिले में दुधारू पशुओं में सर्वाधिक संख्या भैंस वंश की है जिनकी संख्या कुल पशुधन का 38.28% है।

गोवंश में प्रमुख रूप से हरियाणवी, जर्सी , हॉलिसटन तथा अन्य नस्लों में राठी, कॉकरेज , गिर , थारपारकर , सांचौरी , मेवाती नस्ल की देसी गाय है । भैंस वंश में मुर्रा (कुंडी), सुरती व जाफराबादी प्रमुख नस्ले हैं। बकरी वंश में मारवाड़ी (लोही) , बारबरी, जखराना , सिरोही, शेखावाटी नस्ल की बकरियां हैं।

तालिका :– दूध उत्पादन ,भारत व राजस्थान तुलनात्मक विश्लेषण

वर्ष	भारत (000 टन)	राजस्थान (000 टन)
2010-11	121848	13234
2011-12	127904	13512
2012-13	132431	13946
2013-14	137686	14574
2014-15	145736	16934
2015-16	155491	18500
2016-17	165404	20850
2017-18	176347	22427

स्रोत : पशुपालन विभाग राजस्थान (animal husbandry.rajasthan.gov.in)

राज्यवार प्रतिव्यक्ति दुध उपलब्धता (ग्राम में) 2016–17

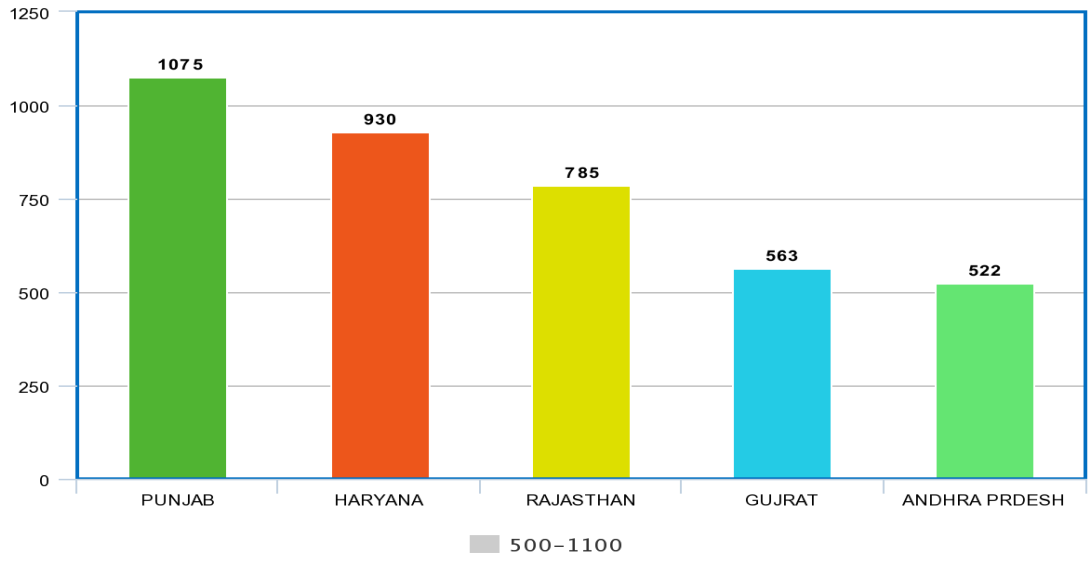

दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से देखे तो भारत में 2017–18 में कुल दूध उत्पादन 17.63 करोड टन है तथा प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 374 ग्राम प्रति व्यक्ति है। राजस्थान में 2017–18 में कुल दूध उत्पादन 2.24 करोड टन है तथा प्रति व्यक्ति दूध उपलब्धता 785 ग्राम है जो राष्ट्रीय औसत से अधिक है। इस प्रकार राजस्थान का दूध उत्पादन में उत्तर प्रदेश के बाद भारत में दूसरा स्थान है। 2017 – 18 में राजस्थान में भारत के कुल दुग्ध उत्पादन का 12.61% दूध उत्पादन हुआ है।

ग्रामीण क्षेत्रों में डेयरी व पशुपालन तथा महिला सशक्तिकरण (Dairy and Livestock in Rural Areas and Women Empowerment)

जनगणना 2011 के आंकड़ों के अनुसार भारत में 58.74 करोड महिला जनसंख्या में से 40.58 करोड महिलाएं ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती हैं जो कुल महिला जनसंख्या का 69.1% हिस्सा है। राजस्थान में कुल 6.5 करोड़ जनसंख्या में से 3.29 करोड महिलाएं हैं, जबकि जयपुर जिले में 66.26 लाख जनसंख्या में से 31.57 लाख महिलाएं हैं।

ग्रामीण क्षेत्र में डेयरी व पशुपालन कार्य महिलाओं के दैनिक जीवन का हिस्सा है यदि जनसंख्या की दृष्टि से देखा जाए तो लगभग आधा हिस्सा महिलाओं का है। लेकिन अक्सर देखने में आता है कि महिलाओं को पुरुषों के बराबर दर्जा नहीं दिया जाता है जो पुरुष प्रधान समाज की विशेषता है, लेकिन वर्तमान समय में सरकार महिला सशक्तिकरण के लिए अनेक प्रयास कर रही है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है "महिलाओं को शक्तिशाली बनाना" अर्थात महिलाओं को अधिकार प्रदान

कर निर्णय निर्माण प्रक्रिया में बराबरी का हिस्सा देना जिससे महिलाएं अपने निर्णय स्वंय ले सके तथा आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सके।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के आर्थिक व सामाजिक स्तर में सुधार में पशुपालन व डेयरी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है जिससे महिलाएं आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्त हुई है तथा परिवार में पहले की तुलना में उनकी स्थिति मजबूत हुई है। हालांकि जब शोधकर्ता ने ग्रामीण महिलाओं से पशुपालन के बारे में बातचीत की तो पाया कि आज भी पशुओं के क्रय – विक्रय व घरेलू दूध के हिसाब में अधिकांश पुरुषों का दखल रहता है। लेकिन पशुओं के दैनिक प्रबंधन व देखभाल की जिम्मेदारी महिलाओं के पास ही है। इसी के साथ दूध विक्रय करने में भी महिलाओं की भागीदारी अधिक है तथा महिला दुग्ध सहकारी समितियो में भी समस्त कार्य महिलाओं द्वारा ही संपन्न किए जाते हैं।

तालिका :– जयपुर डेयरी – कुल पंजीकृत सहकारी समितियां , कुल सदस्य , महिला सदस्य (2008 – 09 से 2017 – 18 तक विशलेषण)

वर्ष	कुल पंजीकृत सहकारी समितिया	कुल सदस्य संख्या	महिला सदस्य संख्या	महिलाओं की भागीदारी % में
2008-09	1469	116222	44511	38.29
2009-10	1612	122550	49702	40.55
2010-11	1758	127950	54406	42.52
2011-12	1771	131132	56474	43.06
2012-13	1793	132950	57787	43.46
2013-14	1807	136516	60186	44.08
2014-15	2035	142841	65216	45.65
2015-16	2183	150080	71972	47.93
2016-17	2256	155280	77037	49.61
2017-18	2343	162659	84075	51.68

स्रोत :– www.jaipurdairy.com एवं शोधकर्त्ता का विश्लेषण

जयपुर डेयरी की रिपोर्ट का आकलन करने पर पाया कि डेयरी क्षेत्र में महिलाओ की हिस्सेदारी प्रतिवर्ष बढ़ रही है। यदि 2008–09 से 2017–18 तक जयपुर डेयरी में कुल पंजीकृत डेयरी सहकारी समितियों, कुल पंजीकृत सदस्यों तथा महिला सदस्यों का तुलनात्मक विवरण देखें तो महिलाओं की भागीदारी अधिक है। 2017–18 में कुल पंजीकृत डेयरी सहकारी समितियां 2343 हैं, जिनमें कुल पंजीकृत सदस्य 162659 है जिनमे से 84075 महिला सदस्यों है। जो कुल सदस्य सख्या का 51.68% है।

यदि राष्ट्रीय स्तर पर घरेलू कार्यो के अलावा ग्रामीण भारत में महिलाओं की विभिन्न गतिविधियों व पशुपालन से संबंधित कार्यों का विश्लेषण करें तो स्पष्ट है कि महिलाओं की इसमें अधिक भूमिका है। महिलाएं पशुपालन से अर्जित धन व पशु उत्पादों का उचित उपयोग करते हुए घर के बच्चे, युवा व वृद्धो की देखभाल हेतु अपना महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। ग्रामीण क्षेत्र में देखे तो पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं के द्वारा पशुपालन में अर्जित धन का संपूर्ण सदुपयोग घरेलू मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किया जाता है जिससे घर में समृद्धि आती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण में डेयरी व पशुपालन की भूमिका

आरेख :– ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण में डेयरी व पशुपालन की भूमिका

निष्कर्ष व सुझाव (Conclusion and Suggestions)

ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के आर्थिक व सामाजिक सशक्तिकरण में डेयरी व पशुपालन का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। डेयरी व पशुपालन प्रत्यक्ष रूप से कृषि के अलावा अतिरिक्त सतत आय का स्रोत व पारिवारिक मूलभूत आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति करने तथा छिपी बेरोजगारी को दूर करके महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है। वही निर्णय प्रबंधन में सहभागिता के कारण सामाजिक सशक्तिकरण भी हुआ है। लेकिन डेयरी में पशुपालन को और भी अधिक उन्नत किया जा सकता है जिसके लिए सुझाव दिए गए।

1. दुधारू पशुओं की गुणवत्ता में सुधार किया जाना चाहिए तथा देसी नस्लों को बढ़ावा देकर दूध उत्पादन बढ़ाया जाना चाहिए।
2. दुधारू पशुओं के लिए बेहतर चारा प्रबंधन किया जाना चाहिए तथा संतुलित आहार का उपयोग करना चाहिए।
3. कृत्रिम गर्भाधान को बढ़ावा देना चाहिए।
4. पशुओं का आवास वैज्ञानिक पद्धति से करना चाहिए जिससे पशुओ को रोगो से बचाया जा सके तथा पशुओं की क्षमता को बढ़ाया जा सके।
5. उन्नत नस्ल के दुधारू पशु रखकर अनावश्यक रूप से पशुओं की कुल संख्या पर होने वाले अनावश्यक खर्चे में कमी की जाए ताकि अधिक आय अर्जित की जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. *प्रशासनिक प्रतिवेदन (2017–18) पशुपालन निदेशालय, राजस्थान, जयपुर।*
2. *पशुपालन विभाग, राजस्थान।* (*animal husbandry.rajasthan.gov.in*)
3. *सिंह, जितेंद्र (2017) :– बरेली परिक्षेत्र में दूध व्यवसाय पशुपालन एवं कृषि व्यवसाय का विश्लेषण।* (*Innovation The Research concept, Vol-2*)
4. *संदीप . चोपड़ा, दीपक . यादव, विपिन चंद्र. (जुलाई 2019) :– कृषि एवं पशुधन उत्पादन के प्रभावी तरीके आय वृद्धि के विकल्प । पशुधन ज्ञान अंक – 2, विस्तार शिक्षा निदेशालय लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार।*
5. *रहल, डॉ .अंशु (जुलाई, 2019) :– दूध उत्पादन के लिए पशु आहार प्रबंधन। पशुधन ज्ञान अंक –2 विस्तार शिक्षा निदेशालय लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय हिसार।*
6. *कुमार, डॉ वीरेंद्र (जनवरी 2017) – ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन एवं डेयरी उद्योग । कुरुक्षेत्र अंक 3*
7. *तिवारी, निलेश कुमार (जनवरी 2017) :– ग्रामीण महिला सशक्तिकरण में पशुपालन की भूमिका।कुरुक्षेत्र अंक 3*
8. *मोहन, राधा (जनवरी 2016):– पशुधन और डेयरी ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण का आधार।*
9. *ग्रामीण महिलाओं में पशुपालन व गृह वाटिका द्वारा उद्यमिता का विकास । (केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर, राजस्थान।) www.cazri.res.in*
10. *जनगणना 2011, परीक्षा मंथन :–जनसंख्या व नगरीकरण।*
11. *www.jaipurdairy.com*

12. *Kumar, Naveen (2005):- Dairy Development in jodhpur : A case study of Bilara Tehsil Vol-2*
13. *Venkataraman Subramanian, Singh A. k, Rao s.v.n (2003):- Dairy development in India: An appraisal of challenges and achievements. concept publishing company, New Delhi-110059*
14. *Candler, Wilfred. Kumar, Nalini (1998):- Indian: The dairy Revolution, The impact of dairy development in India and tha World Bank's contribution. The world Bank, Washington D.C 20433 USA*
15. *Jamal, shatruta (1994):- Women in Dairy development. concept publishing company,New Delhi- 110059*